नमाज़ तथा अपने मातहत काम कर रहे लोगों का ख़्याल रखना।

अनस -रज़ियल्लाहु अनहु- का वर्णन है, वह कहते हैं : जब अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- की मृत्यु का समय आ गया, तो आपने सबसे ज़्यादा जिस बात की वसीयत की, वह
यह थी : "नमाज़ तथा अपने मातहत काम कर रहे लोगों का ख़्याल रखना। नमाज़ तथा अपने मातहत काम कर रहे लोगों का ख़्याल रखना।" अल्लाह के रसूल -सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम- इन
शब्दों को दोहराते रहे, यहाँ कि ये आपके गले में आकर फँसने लगे और ज़बान से सही तरीक़े
से अदा न हो सके।
[स़ह़ीह़] [इसे नसई ने अल-कुबरा में तथा इब्न-ए-माजह ने रिवायत किया है]

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत से पहले तथा अपने जीवन की अंतिम घड़ियों में अपनी उम्मत को जिस बात की सबसे अधिक ताकीद की, वह यह थी : तुम नमाज़ अवश्य ही पाबंदी से अदा करना और उसकी उपेक्षा न करना और अपने मातहत दासों, दासियों के अधिकार तथा उनके साथ अच्छा व्यवहार करना। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन शब्दों को लगातार दोहराते रहे, यहाँ तक कि आवाज़ गले में फँसने लगी और आपकी बात समझनी मुश्किल हो गई।

https://sunnah.global/hadeeth/hi/show/66359